Dt – अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, आप क्या खाएंगे या
पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४ | 1

– Save This Page as a PDF–

अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो,

आप क्या खाएंगे या पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४

खोदाई: मत्ती ६:१९-२४ में आपने खजाने, मालिक और उदारता का चुनाव जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित किया है? पक्षियों और कुमुदिनी के प्रति प्रभु की देखभाल आपको क्या सिखाती है? कार्य नीति इस परिच्छेद में कैसे फिट बैठती है? आस्था कैसी होती है?

चिंतन: जब आप चिंता कर सकते हैं तो प्रार्थना क्यों करें? चिंता हमसे क्या छीनती है? आपको सबसे अधिक चिंता किस कारण से होती है? वे कौन से संकेत हैं जो बताते हैं कि आप बहुत अधिक चिंता कर रहे हैं? परमेश्वर के राज्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए चिंता का प्रतिकार करने के लिए आप क्या करते हैं?

अपने ग्यारहवें उदाहरण में, मसीहा हमें सिखाता है कि, फरीसियों और टोरा- शिक्षकों के विपरीत, सच्ची धार्मिकता ईश्वर पर निर्भर करती है। यहां मसीहा हमारे आसपास की दुनिया के प्रकाश में हमारी आंतरिक प्राथमिकताओं और मूल्यों का मूल्यांकन करने के सिद्धांत पर विस्तार करता है। अमीर और गरीब दोनों की अपनी विशेष समस्याएं हैं। अमीरों को अपनी संपत्ति पर भरोसा करने का प्रलोभन होता है (देखें डॉ – स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर सेंध लगाकर चोरी नहीं करते)। वहां, उस फ़ाइल में यीशु ने विलासिता, या स्वार्थी कारणों से लोगों द्वारा जमा की जाने वाली अनावश्यक भौतिक संपत्तियों के प्रति दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया। लेकिन यहां, वह उन गरीबों पर ध्यान केंद्रित करता है जो ईश्वर के प्रावधान
– पैसे और चिंता के बीच पूरी तरह से मानवीय संबंध – पर संदेह करने के लिए प्रलोभित होते हैं। येशुआ के संदेश का सार यह है कि हमें ज़रूरतों के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। वह हमें वचन २५, ३१ और ३४ में तीन बार आदेश देते हैं: चिंता मत करो और हमें चार कारण बताते हैं कि क्यों चिंता करना गलत है।

सबसे पहले, चिंता करना हमारे स्वामी के कारण बेवफा है। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं, अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो (ग्रीक सुचे, जिसका अर्थ है एक व्यक्ति के सभी अस्तित्व, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक), तुम क्या खाओगे या पीओगे; या अपने शरीर के बारे में, आप क्या पहनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं है (मत्ती ६:२५)? चिंता ईश्वर के वादे और प्रावधान पर भरोसा न करने का पाप है, फिर भी हमारे गिरे हुए स्वभाव के कारण, यह बहुत आम है।

Dt – अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, आप क्या खाएंगे या
पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४ | 2

अंग्रेजी शब्द चिंता एक पुराने जर्मन शब्द से आया है जिसका अर्थ है गला घोंटना या गला घोंटना। और चिंता बिल्कुल यही करती है; यह एक प्रकार का मानसिक और भावनात्मक गला घोंटना है। चिंता संतोष के विपरीत है, और हम सभी को रब्बी शाऊल के साथ यह कहने में सक्षम होने का प्रयास करना चाहिए: मैंने चाहे जो भी परिस्थिति हो, संतुष्ट रहना सीख लिया है। मैं जानता हूं कि विनम्र साधनों से कैसे काम चलाना है, और मैं यह भी जानता हूं कि समृद्धि में कैसे रहना है; किसी भी और हर परिस्थिति में मैंने तृप्त होने और भूखे रहने का, प्रचुरता और कष्ट सहने का रहस्य सीख लिया है (फिलिप्पियों ४:११-१२; प्रथम तीमुथियुस 6:6-8 एनएएसबी)।

हमारा संतोष यहोवा में पाया जाता है, और केवल यहोवा में – उसके स्वामित्व, नियंत्रण और प्रावधान में। अब हमारे पास जो कुछ भी है वह प्रभु का है, और जो कुछ भी हमारे पास होगा वह भी उसी का है। पृय्वी यहोवा की है, और जो कुछ उस में है, और संसार और जो उस में रहते हैं, उन सब समेत; क्योंकि उस ने उसकी नेव समुद्रोंपर डाली, और महानदोंके ऊपर स्थिर की। (भजन संहिता २४:१ सीजेबी) तो अगर सब कुछ पहले से ही उसका है, तो फिर, हम उसके बच्चों से वह चीज़ छीनने की चिंता क्यों करते हैं जो वास्तव में उसका है? इसके बाद, हाशेम हर चीज़ को नियंत्रित करता है। धन और प्रतिष्ठा तुझ से आती है, तू ही सब वस्तुओं पर प्रभुता करता है, तेरे हाथ में शक्ति और सामर्थ है, तू सब को बड़ा करने और बल देने की सामर्थ रखता है (पहला इतिहास २९:१२)। अंत में, विश्वासियों को संतुष्ट रहना चाहिए क्योंकि ईश्वर सब कुछ प्रदान करता है। सर्वोच्च स्वामी और नियंत्रक भी सर्वोच्च प्रदाता है, जैसा कि उनके प्राचीन नामों में से एक, यहोवा यिरेह, या प्रभु प्रदान करेगा (उत्पत्ति २२:१४ ए) में बताया गया है। यदि इब्राहीम, हाशेम के बारे में अपने सीमित ज्ञान के साथ, इतना मजबूत और संतुष्ट हो सकता है, तो हमें कितना अधिक होना चाहिए जो मसीहा को जानते हों और जिनके पास उनका पूरा लिखित वचन हो? जैसा कि पॉल ने हमें आश्वासन दिया: और मेरा ईश्वर मसीह यीशु में अपनी महिमा के धन के अनुसार आपकी सभी जरूरतों को पूरा करेगा (फिलिप्पियों ४:१९)।

दूसरा, हमारे पिता के कारण चिंता करना अनावश्यक है। इन छंदों का मूल अर्थ यह है कि विश्वासियों के रूप में, हमारे पास चिंता करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि यहोवा हमारे स्वर्गीय पिता हैं। यह ऐसा है मानो पवित्र आत्मा हमसे पूछ रहा हो, “क्या तुम भूल गए हो कि तुम्हारा पिता कौन है?” इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए, यीशु हमें दिखाते हैं कि भोजन, दीर्घायु और कपड़ों के बारे में चिंता करना कितना मूर्खतापूर्ण और अनावश्यक है।

Dt – अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, आप क्या खाएंगे या
पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४ | 3



भोजन के बारे में चिंता: उत्तरी गलील में कई
पक्षी हैं, और ऐसा लगता है कि यीशु ने उनमें से कुछ को उड़ते हुए इंगित किया था जैसा कि उन्होंने कहा था: आकाश के पक्षियों को देखो। एक वस्तुगत पाठ के रूप में, उन्होंने इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित किया कि पक्षियों के पास भोजन प्राप्त करने की कोई जटिल प्रक्रिया नहीं है। वे न तो बोते हैं, न काटते हैं और न ही खलिहानों में भंडारण करते हैं। प्रत्येक प्राणी की तरह, पक्षी भी अपना जीवन ईश्वर से प्राप्त करते हैं। लेकिन वह उनसे यह नहीं कहता, “ठीक है, मैंने अपना काम कर दिया है, अब से आप अपने आप पर निर्भर हैं।” प्रभु ने उन्हें प्रचुर मात्रा में खाद्य संसाधन और अपने और अपनी संतानों के लिए उन संसाधनों को खोजने की प्रवृत्ति प्रदान की है। और फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खाना खिलाता है। यदि प्रभु पक्षियों जैसे अपेक्षाकृत महत्वहीन प्राणियों की इतनी सावधानी से देखभाल करते हैं, तो वह उन लोगों की कितनी अधिक देखभाल करेंगे जो उनकी अपनी छवि में बनाए गए हैं और जो विश्वास के माध्यम से उनके बच्चे बन गए हैं? क्या आप उनसे अधिक मूल्यवान नहीं हैं (मत्ती) ६:२६)?

लंबी उम्र की चिंता: हमारी संस्कृति लंबे समय तक जीने की कोशिश पर केंद्रित है। हम व्यायाम करते हैं, सावधानी से खाते हैं, विटामिन और खनिजों के साथ अपने आहार को पूरक करते हैं, नियमित जांच कराते हैं, और अपने जीवन में कुछ साल जोड़ने की उम्मीद में सूरज के नीचे सब कुछ करते हैं। फिर भी यहोवा हमारी मृत्यु का वर्ष, दिन, और समय जानता है। व्यायाम वगैरह ठीक है लेकिन वे हमारे जीवन में एक घंटा नहीं जोड़ सकते। क्या तुममें से कोई चिन्ता करके अपने जीवन में एक घंटा भी जोड़ सकता है (मत्ती ६:२७)? आप अपने आप को मृत्यु तक चिंता में डाल सकते हैं, लेकिन जीवन को लेकर नहीं। मिनियापोलिस, मिनेसोटा के प्रसिद्ध मेयो क्लिनिक के डॉ. चार्ल्स मेयो ने लिखा, “चिंता परिसंचरण, हृदय, ग्रंथियों और पूरे तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है। मैंने कभी किसी व्यक्ति को अत्यधिक काम के कारण मरते हुए नहीं देखा, लेकिन मैंने ऐसे बहुत से लोगों को जाना है जिनकी मृत्यु चिंता के कारण हुई।”

कपड़ों के बारे में चिंता: तीसरा चित्रण कपड़ों से संबंधित है, जिसमें लिली को एक मॉडल के रूप में इस्तेमाल किया गया है। निश्चय ही जिन लोगों से यीशु ने बातें कीं उनमें से बहुतों के पास छोटे कपड़े थे। उसने फिर से उनके परिवेश की ओर इशारा किया

Dt – अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, आप क्या खाएंगे या
पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४ | 4

होगा, इस बार लिली की ओर, उन्हें प्रभु की चिंता और प्रावधान के बारे में आश्वस्त करने के लिए। और कपड़ों की चिंता क्यों? उन खूबसूरत लिली को बढ़ने के लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ा और खुद को डिजाइन करने या रंगने में उनकी कोई भूमिका नहीं थी। देखो, खेत की लिली कैसे बढ़ती – फूलती है। वो मेहनत नहीं करते या घूमते नहीं। तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में इन में से किसी एक के समान तैयार न हुआ था (मत्ती ६:२८-२९)। इस बिंदु पर भाषा विशेष रूप से भीड़ के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु व्याख्या के एक रब्बी सिद्धांत का उपयोग करते हैं जिसे पहले रब्बी हिलेल (१० ईस्वी) द्वारा सात सिद्धांतों में विस्तृत किया गया था। क्योंकि इन सिद्धांतों का उपयोग ईसा मसीह के दिनों में किया गया था, इसलिए उनके शब्दों को समझना प्रासंगिक है। यहां, वह अपने श्रोताओं के विश्वास को चुनौती देने के लिए मिडडॉट सिद्धांतों में से एक का उपयोग करता है: यदि परमेश्वर अपनी प्राकृतिक रचना प्रदान करता है, तो हम कितना अधिक आश्वस्त हो सकते हैं कि वह उन लोगों के लिए प्रदान करेगा जो उसे अपने स्वर्गीय पिता कहते हैं? क्या वह हमारी आपूर्ति करता है चाहता है – कभी-कभी; लेकिन क्या वह हमारी ज़रूरतों की पूर्ति करता है – बिल्कुल।

हालाँकि, उनकी सुंदरता के बावजूद, लिली लंबे समय तक नहीं टिकती। यदि परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल आग में झोंकी जाएगी, इसी रीति से पहिनाता है, तो क्या वह तुम्हें, हे अल्पविश्वासियों, और भी न पहिनाएगा (मत्ती ६:३०)? यदि प्रभु मैदान की घास को सुंदर लेकिन अल्पकालिक लिली के फूलों से सजाने की चिंता करते हैं, तो उन्हें अपने बच्चों के बारे में कितनी अधिक चिंता है जो अनंत काल तक जीवित रहेंगे (Bw देखें – विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करते हैं)? मसीहा कहते हैं, जीवन की आवश्यकताओं के बारे में चिंता करना पाप है और कम विश्वास दर्शाता है। जब हम प्रतिदिन परमेश्वर के वचन में नहीं होते हैं ताकि मसीह हमारे दिल और दिमाग में रहे, तो विरोधी उस शून्य में चला जाता है और चिंता के बीज बोता है। रब्बी शाऊल हमें सलाह देते हैं जैसे उन्होंने इफिसुस में मसीहा समुदाय को दिया था: मैं प्रार्थना करता हूं कि हमारे प्रभु येशुआ के मसीहा, गौरवशाली पिता, आपके दिलों की आंखों को रोशनी देंगे, ताकि आप उस आशा को समझ सकें जिसके लिए उस ने तुम्हें बुलाया है, कि उस विरासत में कितनी बड़ी महिमा है, जिस की प्रतिज्ञा उस ने अपने लोगों से की है, और उसकी शक्ति हम में, जो उस पर भरोसा करते हैं, कितनी महानता से काम कर रही है (इफिसियों 1:17-19ए सीजेबी)।

हमारे विश्वास के कारण चिंता अनुचित है। चिंता अविश्वास की विशेषता है. इसलिए चिंता मत करो और कहो, “हम क्या खाएंगे?” या “हम क्या पियेंगे?” या “हम क्या पहनेंगे?” क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं के पीछे भागते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें उनकी आवश्यकता है। (मत्ती ६:३१-३२) जिन लोगों को परमेश्वर से कोई आशा नहीं है, वे स्वाभाविक रूप से उन चीज़ों में अपनी आशा और अपेक्षाएँ रखते हैं जिनका वे अभी आनंद ले सकते हैं। उनके पास वर्तमान के

Dt – अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, आप क्या खाएंगे या
पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४ | 5

अलावा जीने के लिए कुछ भी नहीं है, और उनका भौतिकवाद उनके विश्वदृष्टिकोण से पूरी तरह मेल खाता है। उनकी भौतिक या आध्यात्मिक ज़रूरतों, उनकी वर्तमान या शाश्वत ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उनके पास कोई ईश्वर नहीं है, इसलिए उन्हें जो कुछ भी मिलता है वह उन्हें अपने लिए ही प्राप्त करना होता है। वे प्रभु के प्रावधान से अनभिज्ञ हैं और इसलिए इससे लाभ नहीं उठा सकते। कोई भी स्वर्गीय पिता उनकी परवाह नहीं करता, इसलिए उनके लिए चिंता करने का कारण है।

अन्यजातियों के देवता आत्माओं के विनाशक से प्रेरित होकर मानव निर्मित देवता थे। वे भय, डर और तुष्टिकरण के देवता थे जो बहुत कुछ मांगते थे, बहुत कम वादा करते थे और कुछ भी प्रदान नहीं करते थे। यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि जो लोग ऐसे देवताओं की सेवा करते थे, वे इन सभी चीजों के पीछे भागते थे और जब भी संभव हो, वे संतुष्टि और सुख की तलाश करते थे। उनका दर्शन आज भी उन लोगों के बीच मौजूद है जो शैतान की तरह जीने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आइए हम खाएं और पिएं, क्योंकि कल हम मर जाएंगे (प्रथम कुरिन्थियों १५:३२) उन लोगों के लिए एक समझने योग्य जीवनशैली है जिन्हें पुनरुत्थान में कोई आशा नहीं है (प्रकाशितवाक्य एफएफ पर मेरी टिप्पणी देखें – धन्य और पवित्र वे हैं जिन्होंने पहले पुनरुत्थान में भाग लिया है)).

लेकिन शैतान की तरह जीना उन लोगों के लिए पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण और अनुचित है जो पुनरुत्थान में आशा रखते हैं, क्योंकि जिनके स्वर्गीय पिता जानते हैं कि [उन्हें] जीवन की बुनियादी बातों की आवश्यकता है (मत्ती ६:३२)। इस बारे में चिंता करना, “हम क्या खाएंगे?” या “हम क्या पियेंगे?” या “हम क्या पहनेंगे” विश्वास की कमी को दर्शाता है। जब हम इस दुनिया की तरह सोचते हैं और इस दुनिया की चीजों की इच्छा करते हैं, तो हम इस दुनिया की तरह चिंता करेंगे क्योंकि एक मन जो ईश्वर पर केंद्रित नहीं है वह एक ऐसा मन है जिसके पास चिंता का कारण है। वफादार आस्तिक रब्बी शाऊल की सलाह का पालन करता है जब वह हमें चेतावनी देता है: किसी भी चीज़ के बारे में चिंता मत करो; इसके विपरीत, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ अपनी विनती परमेश्वर को बताएं (फिलिप्पियों ४:६ सीजेबी)। वफादार आस्तिक किसी भी तरह से इस दुनिया के अनुरूप होने से इनकार करता है (रोमियों १२:२ एनएएसबी)।

हमारा आह्वान अपेक्षाकृत सरल है – लेकिन गहरा है: पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करें, और ये सभी चीजें आपको भी दी जाएंगी (मत्ती ६:३३)। यीशु हमसे क्या कह रहे हैं, “अविश्वासियों की तरह भोजन, पेय और कपड़ों की तलाश और चिंता करने के बजाय, अपना ध्यान और आशा ईश्वर की चीजों पर केंद्रित करें, और वह आपकी बुनियादी जरूरतों का ख्याल रखेगा।” दुनिया की सभी चीज़ों में से, दो चीज़ें हैं जिनकी हमें तलाश करने की ज़रूरत है: परमेश्वर का राज्य और परमेश्वर की धार्मिकता। जैसा कि हमने शिष्यों की प्रार्थना की शिक्षा में देखा है (Dpदेखें
– जब आप प्रार्थना करें, अपने कमरे में जाएं और दरवाज़ा बंद कर लें), प्रभु का राज्य भविष्य में मसीहा राज्य और अब ईश्वर का संप्रभु शासन दोनों है। इस संसार

Dt – अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, आप क्या खाएंगे या
पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४ | 6

की चीज़ों की लालसा करने के बजाय, हमें नींव वाले शहर की प्रतीक्षा करनी चाहिए, जिसका वास्तुकार और निर्माता ईश्वर है (इब्रानियों ११:१०)। लेकिन यह भविष्य में किसी चीज़ की लालसा से कहीं अधिक है; यह वर्तमान में किसी चीज़ की लालसा भी है – ईश्वर की धार्मिकता। हमें न केवल स्वर्गीय उम्मीदें रखनी हैं बल्कि पवित्र और ईश्वरीय जीवन भी जीना है (कुलुस्सियों ३:२-३)। चूँकि यह संसार अंततः नष्ट हो जाएगा, हमें किस प्रकार का व्यक्ति बनना चाहिए? हमें पवित्र जीवन जीना चाहिए, क्योंकि हम परमेश्वर के दिन की प्रतीक्षा करते हैं और उसके आने में तेजी लाने के लिए काम करते हैं (दूसरा पतरस ३:११-१२ए सीजेबी)।

अपने भविष्य को लेकर चिंता करना मूर्खतापूर्ण है। पृथ्वी पर विचार करें! हमारे ग्लोब का वजन छह सेक्स्टिलियन टन (इक्कीस शून्य वाला छह) अनुमानित किया गया है। फिर भी यह बिल्कुल तेईस डिग्री पर झुका हुआ है; इससे अधिक या कम तो हमारी ऋतुएँ पिघली हुई ध्रुवीय बाढ़ में नष्ट हो जाएँगी। यद्यपि हमारा ग्लोब एक हजार मील प्रति घंटे या पच्चीस हजार मील प्रति दिन या नौ मिलियन मील प्रति घंटे की गति से घूमता है, हममें से कोई भी कक्षा में नहीं गिरता है।

प्रभु की कार्यशाला का अवलोकन करते समय, मैं कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ। यदि वह तारों को उनकी जेबों में रखने और आकाश को पर्दे की तरह लटकाने में सक्षम है, तो क्या आपको लगता है कि यह दूर से संभव है कि परमेश्वर आपके जीवन का मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं? यदि आपका ईश्वर सूर्य को प्रज्वलित करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है, तो क्या ऐसा हो सकता है कि वह आपके मार्ग को रोशन करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो? यदि वह शनि ग्रह की इतनी परवाह करता है कि उसे छल्ले दे सके या शुक्र ग्रह की उसे चमकदार बना सके, तो क्या कोई बाहरी संभावना है कि वह आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए आपकी इतनी परवाह करता है?

इसलिए कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल अपनी चिंता स्वयं कर लेगा। प्रत्येक दिन की अपनी पर्याप्त परेशानी होती है (मत्ती ६:३४)। इस कहावत में लोकप्रिय लौकिक ज्ञान की झलक मिलती है। कल के लिए उचित प्रावधान करना उचित है, लेकिन कल की चिंता करना मूर्खता है। ऐसा लगता है कि कुछ लोग चिंता करने पर इतने आमादा हैं कि अगर आज के बारे में चिंता करने की कोई बात नहीं है तो वे कल के बारे में चिंता करने के लिए कुछ न कुछ ढूंढ ही लेते हैं। येशुआ कहता है कि ऐसा मत करो क्योंकि कल को अपनी चिंता होगी। पुराने मन्ना की तरह (निर्गमन Cr पर मेरी टिप्पणी देखें – मैं आपके लिए स्वर्ग से मन्ना बरसाऊंगा), परमेश्वर हमें एक समय में केवल एक दिन के लिए पर्याप्त अनुग्रह देते हैं। यीशु का अनुयायी होना आसान नहीं हो सकता है, लेकिन वह रास्ते में पिता और पवित्र आत्मा की उपस्थिति का वादा करता है। चिंता खुशी की सबसे बड़ी चोर है।

कोई भ्रम न हो, बाइबल चिंता या संकट की भावनाओं की निंदा नहीं करती है। हमें सांसारिक चिंताओं पर चिंता करने से बचने की सलाह दी जाती है, जैसे कि भौतिक

Dt – अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, आप क्या खाएंगे या
पीएंगे, या आप क्या पहनेंगे मत्ती ६:२५-३४ | 7

ज़रूरतें जिन्हें प्रभु ने पूरा करने का वादा किया है। लेकिन एक माता-पिता की अपने बच्चों के आध्यात्मिक कल्याण के बारे में चिंता करना बिल्कुल उचित है! हालाँकि, चिंता को हमें समस्याओं से रचनात्मक तरीके से निपटने के लिए प्रेरित करना चाहिए, विशेष रूप से चिंता के लिए ईश्वर के उपाय को नियोजित करके: प्रार्थना (फिलिप्पियों ४:६-७)। आइए हम इस धारणा को किनारे रखें कि चिंता पाप है। यह नहीं है। मुद्दा यह है कि हमें भौतिक चीजों को हमारे लिए बोझ बनाकर जीवन नहीं गुजारना चाहिए। हमें चिंता करने के लिए हमेशा कुछ न कुछ मिल सकता है; हालाँकि, जब मसीहा हमारे जीवन पर नियंत्रण रखता है – तो परेशान क्यों हों?